रवींद्र नाथ ठाकुर : "एकला चलो रे" का रंग-आह्वान

डॉ. सुरभि विप्लव
सहायक प्राध्यापक
प्रदर्शनकारी कला विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा - 442 001 (महाराष्ट्र), भारत

आज हम रवींद्र नाथ टैगोर की 158 वीं जयंती मना रहे हैं, पूरी दुनिया उन्हें उनके 'गीतांजलि' पर नोबल पुरस्कार के लिए याद करती है और हम भारतीय भी अपनी पीठ थपथापा लेते है कि टैगोर के बहाने ही सही यहाँ पहला नोबल तो मिला, लेकिन 'गीतांजलि' के अलावा भी उन्होने संसार को सुंदर बनाने के लिए बहुत कुछ दिया। उन्होने एक हजार से अधिक कविताएं लिखी हैं और दो

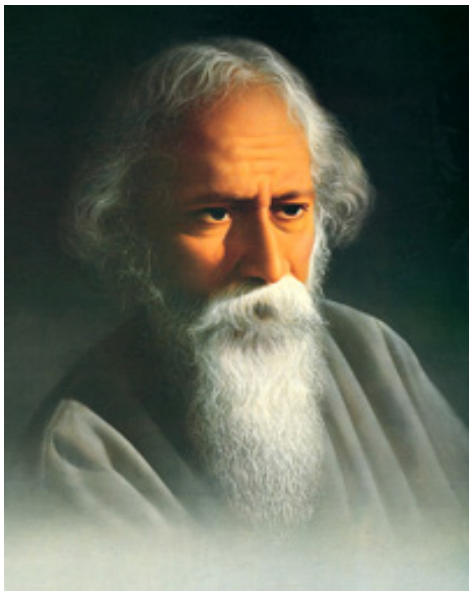

हजार से भी अधिक गीतों की रचना की। इसके अतिरिक्त बहुत सारी कहानियाँ, उपन्यास, पेंटिंग, शिक्षा, दर्शन और राजनीति जैसे विविध विषयों पर सृजन किए। इन सबके अलावा रवींद्र नाथ टैगोर एक महान नाटककार-निर्देशक भी थे जिनके नाट्य-नृत्य-गीत संबंधी परंपरा आज भी शांतिनिकेतन के परिसर और विश्व के मंच पर गूँजता है।

रवींद्र नाथ टैगोर नाटककर, अभिनेता, निर्देशक, नर्तक एवं संगीतकार थे, उन्होने कलाओं के लिए अपने द्वार को खोले थे उदाहरण के लिए शांतिनिकेतन को ही ले लीजिये जहां आज भी आरंभिक शिक्षा वृक्ष के नीचे बैठकर की जाती है वहाँ के शिष्य और गुरु दोनों ही जमीन पर बैठते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि शिष्य अपने गुरु यदि पुरुष है तो दादा यदि स्त्री है तो दीदी कहते है, यह परंपरा टैगोर ने इसलिए डाली कि शिष्य और गुरु का रिश्ता बहुत दूर का न होकर अपनत्व भरा करीब का लगे। वस्त्र विधान भी, भारतीय कुर्ता-पैजमा जिससे छात्रों को सहूलियत हो, बहुत ही चिंतन के साथ लागू किए। कला तो वहाँ कि धरती में कूट कूट कर भरी है, रवींद्र गीत, रवींद्र नृत्य तथा रवींद्र नाटक जो अपनी एक विशेष शैली और संवेदना के लिए प्रसिद्ध है। बंगला नाटक के विकास के लिए अनेक लेखकों, कलाकारों रंगकर्मियों और शुभेच्छुओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। यह वह युग था जब अर्थप्राप्ति के लिए लोग थियेटर नहीं करते थे, बल्कि थियेटर के माध्यम से समाज सेवा ही अपना धर्म समझते थे। अपने परिवार और समाज से बहिष्कृत और आवृत होकर, सुंदर समाज

के लिए थियेटर में लगे रहे। इसी प्रकार से रवीन्द्रनाथ टैगोर ने साहित्य की अन्य विधाओं के साथ-साथ रंगमंच को भी बहुत कुछ दिया। उनके परिवार के बीच 'जोरासांको थियेटर' का दल काम करता था। उस दल द्वारा अभिनीत नाटक को देखकर इनके मन में उसके प्रति अनुराग हुआ। 1877 में पहली बार अपनी पारिवारिक प्रस्तुति में ये मंच पर आये। लेकिन जनता के बीच पहली बार 'वाल्मीकि प्रतिभा' नाटक के माध्यम से जाने गये। उसके बाद इन्होंने कई नाटकों का मंचन किया और कई का निर्देशन भी किया। इन्होंने अनेक नाटक भी लिखे। 75 वर्ष की उम्र में शांति निकेतन में 1935 ई में अपने नाटक .'शरदोत्सव' में अन्तिम बार उतरे। इनके नाटकों में संगीत नाटक, काव्य नाटक, हास्यप्रधान नाटक, सामाजिक नाटक, प्रतीकात्मक नाटक हैं। 'बहुरूपी' थियेटर दल ने शम्भु मित्रा के निर्देशन में इनके कुछ बड़े नाटकों का प्रदर्शन किया। रविबाबू की रूचि थियेटर में थी लेकिन वह थियेटर से औरों की तरह जुड़े नहीं रहे। उनके लिखे नाटकों में वाल्मीकि प्रतिभा, ऋतुरंग, वसंत, फाल्गुनी, शेशवर्षण, चण्डालिका, ताशेरदेश, चित्रांगदा, यामा, राजा और रानी, विसर्जन, शरदोत्सव, प्रायश्चित, डाकघर, चिरकुमार सभा, अचलआयतन, रक्तकरबी, मुक्तधारा, गृहप्रवेश, शेषरक्षा आदि हैं। जब 1917 में ' जोरासांको थियेटर' भवन के 'विचित्र हॉल' में 'डाकघर' का मंचन हो रहा था तो आमंत्रित दर्शकों में महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक, एनीबेसेन्ट, मदनमोहन मालवीय जैसे लोग भी उपस्थित थे। टैगोर ने अपने नाटकों का अधिकांश मंचन शांतिनिकेतन में ही किया। एक बार उन्होंने कहा है कि कलकत्ता के थियेटर की अपेक्षा बंगाल का जात्रा ज्यादा पसंद है क्योंकि जात्रा में अभिनेता और दर्शक के बीच निकटता अधिक रहती है। टैगोर के इस कथन में लोकरंग की सुगंध को महसूस किया जा सकता है।

टैगोर के नाटक आज भी प्रासंगिकता को लिए हुए है उदाहरण के लिए नाटक रक्तकरबी, विसर्जन, मुक्तधारा आदि। महान निर्देशक शंभू मित्र उनके 'रक्तकरबी' को प्रस्तुत करके ही महान बने। इस नाटक में एक सशक्त स्त्री पात्र 'नंदिनी' समूची राजसत्ता को हिला कर रख देती है। ऐसे कई उदाहरण बांग्ला रंग में आज भी देखा जा सकता है जहां रबीन्द्र का रंग बहुत ही चटख है। बंगाल से बाहर हबीब तनवीर जैसे अनेक निर्देशक भी टैगोर का 'विसर्जन' कई बार प्रस्तुत किए हैं। नृत्य नाटिका को टैगोर ने एक अलग पहचान दिया। 'तोता कहानी,' 'चित्रांगदा' और 'चंडालिका' जैसी नृत्य नाटिकाओं का अपना अलग ही महत्व है। जिसे मंचित करके आज के अंधकार को कम किया जा सकता है। उनके द्वारा रचित संगीत जीवन के वास्तविक परतों को खोलता है, गीत जो नृत्य और संगीत के साथ विलयित होकर जादुई संप्रेषणीयता को चार-चाँद लगाता है, यह प्रयोग रंगमंच को जीवंत बनाता है। "मेरे मन में नित कोई नाचे रे ताता थेई", "आनंद धारा बहे रे जग में", "तेरी आवाज़ पे यदि कोई ना आए तो फिर चल अकेला रे" आदि ऐसे ही अनेक रवीन्द्र नृत्य–गीत-संगीत प्रधान हैं। गुरुदेव ने जीवन के अंतिम दिनों में चित्र बनाना शुरू किया। जिसमें युग का

संताप, संशय, गुलामी, क्लान्ति और निराशा और आशा के स्वर अभिव्यक्त हुये। मूल रूप से मनुष्य और ईश्वर का संबंध उनकी रचनाओं में बहू रंग- रूपों में प्रस्फुटित हुआ है, जिसमें से प्रत्येक विद्वान अपनी-अपनी दृष्टी के अनुसार मोक्ष, आक्रोश, संघर्ष, विद्रोह, मुक्ति, आनंद हरेक तरह की विशिष्टताओं को रेखांकित करने में सफल हो पाते हैं। रबीन्द्रनाथ की यह बहुत बड़ी रेंज है जिसे किसी एक खांचे में बांधना मुश्किल है। आज भी जब हम नृत्य, संगीत और नाटक की संस्कृति की बात करते हैं तो बिना रवीद्र नाथ के सब अधूरा लगता है।

संदर्भ

1. रवीन्द्रनाथ के नाटक ,साहित्य अकादमी ,ISBN :81-260-1407-5
2. गीतांजलि ,रवीन्द्रनाथ ठाकुर ISBN -81-216-003-6